Urdu Devanagari Script: Unlocked Literal Bible for Lamentations

Formatted for Translators

©2022 Wycliffe Associates

Released under a Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License.

Bible Text: The English Unlocked Literal Bible (ULB)

©2017 Wycliffe Associates

Available at <https://bibleineverylanguage.org/translations>

The English Unlocked Literal Bible is based on the unfoldingWord® Literal Text, CC BY-SA 4.0. The original work of the unfoldingWord® Literal Text is available at [https://unfoldingword.bible/ult/](https://nam12.safelinks.protection.outlook.com/?url=https%3A%2F%2Funfoldingword.bible%2Fult%2F&data=02%7C01%7Cmarv_lucas%40wycliffeassociates.org%7Cab3b29dbe7fc44554aeb08d8080e8e70%7C7baa11086adb4be299cf00a4872ab1cf%7C0%7C0%7C637268205914531190&sdata=SW2KxVr%2BcxHGAgMpv602NzoYenorfHi9bOs2SNzVpR4%3D&reserved=0).

The ULB is licensed under the Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License.

Notes: English ULB Translation Notes

©2017 Wycliffe Associates

Available at <https://bibleineverylanguage.org/translations>

The English ULB Translation Notes is based on the unfoldingWord translationNotes, under CC BY-SA 4.0. The original unfoldingWord work is available at <https://unfoldingword.bible/utn>.

The ULB Notes is licensed under the Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License.

To view a copy of the CC BY-SA 4.0 license visit <http://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/>

Below is a human-readable summary of (and not a substitute for) the license.

**You are free to:**

* **Share**— copy and redistribute the material in any medium or format.
* **Adapt**— remix, transform, and build upon the material for any purpose, even commercially.

The licensor cannot revoke these freedoms as long as you follow the license terms.

**Under the following conditions:**

* **Attribution**— You must attribute the work as follows: “Original work available at <https://BibleInEveryLanguage.org>.” Attribution statements in derivative works should not in any way suggest that we endorse you or your use of this work.
* **ShareAlike**— If you remix, transform, or build upon the material, you must distribute your contributions under the same license as the original.
* **No additional restrictions**— You may not apply legal terms or technological measures that legally restrict others from doing anything the license permits.

**Notices:**

You do not have to comply with the license for elements of the material in the public domain or where your use is permitted by an applicable exception or limitation.

No warranties are given. The license may not give you all of the permissions necessary for your intended use. For example, other rights such as publicity, privacy, or moral rights may limit how you use the material.



TOC \o "1-2" \h \z \uRight-click to update field (doing so will insert table of contents).

Page left intentionally blank

## नोहा

Chapter 1

1वह बस्ती जो लोगों से भरी थी, कैसी ख़ाली पड़ी है! वह क़ौमों की 'ख़ातून बेवा की तरह ~हो गई! वह कुछ गुज़ारे के लिए मुल्क की ~मलिका बन गई!2वह रात को ज़ार-ज़ार रोती है, उसके आँसू चेहरे पर बहते हैं; उसके चाहने वालों में कोई नहीं जो उसे तसल्ली दे; उसके सब दोस्तों ने उसे धोका दिया, वह उसके दुश्मन हो गए।3यहूदाह ज़ुल्म और सख़्त मेहनत की वजह ~से जिलावतन हुआ, वह क़ौमों के बीच रहते और बे-आराम है, उसके सब सताने वालों ने उसे घाटियों में जा लिए।4सिय्यून के रास्ते मातम करते हैं, क्यूँकि ख़ुशी के लिए कोई नहीं आता; उसके सब दरवाज़े सुनसान हैं, उसके काहिन आहें भरते हैं;उसकी कुँवारियाँ मुसीबत ज़दा हैं और वह ख़ुद ग़मगीन है |5~उसके मुख़ालिफ़ ग़ालिब आए और दुश्मन खु़शहाल हुए; क्यूँकि ख़ुदावन्द ने उसके गुनाहों की ज़्यादती ~के ज़रिए' उसे ग़म में डाला; उसकी औलाद को दुश्मन ग़ुलामी में पकड़ ले गए।6~सिय्यून की बेटियों की सब शान-ओ-शौकत जाती रही; उसके हाकिम उन हरनों की तरह हो गए हैं,जिनको चरागाह नहीं मिलती, और शिकारियों के सामने बे बस हो जाते हैं।7यरुशलीम को अपने ग़म-ओ-मुसीबत के दिनों में, जब उसके रहने वाले दुश्मन का शिकार हुए,और किसी ने मदद न की, अपने गुज़रे ~ज़माने की सब ने'मतें याद आईं, दुश्मनों ने उसे देखकर उसकी बर्बादी पर हँसी उड़ाई।8~यरुशलीम सख़्त गुनाह करके नापाक हो गया; जो उसकी 'इज़्ज़त करते थे, सब उसे हक़ीर जानते हैं, हाँ, वह ख़ुद आहें भरता, और मुँह फेर लेता है।9उसकी नापाकी उसके दामन में है,उसने अपने अंजाम का ख़्याल न किया; इसलिए वह बहुत बेहाल हुआ;और उसे तसल्ली देने वाला कोई न रहा; ऐ ख़ुदावन्द, मेरी मुसीबत पर नज़र कर; क्यूँकि दुश्मन ने ग़ुरूर किया है।10दुश्मन ने उसकी तमाम 'उम्दा चीज़ों पर हाथ बढ़ाया है; उसने अपने मक़्दिस में क़ौमों को दाख़िल होते देखा है। जिनके बारे में तू ने फ़रमाया था, कि वह तेरी जमा'अत में~दाख़िल न हों।11उसके सब रहने वाले ~कराहते और रोटी ढूंडते हैं, उन्होंने अपनी 'उम्दा चीज़े दे डालीं, ताकि रोटी से ताज़ा दम हों;ऐ ख़ुदावन्द, मुझ पर नज़र कर; क्यूँकि मैं ज़लील हो गया12ऐ सब आने जाने वालों, क्या तुम्हारे नज़दीक ये कुछ नहीं? नज़र करो और देखो; क्या कोई ग़म मेरे ग़म की तरह है, जो मुझ पर आया है जिसे ख़ुदावन्द ने अपने बड़े ग़ज़ब के वक़्त नाज़िल किया।13उसने 'आलम-ए-बाला से मेरी हड्डियों में आग भेजी, और वह उन पर ग़ालिब आई; उसने मेरे पैरों के लिए जाल बिछाया,उस ने मुझे पीछे लौटाया: उसने मुझे दिन भर वीरान-ओ-बेताब किया।14मेरी ख़ताओं का बोझ उसी के हाथ से बाँधा गया है; वह बाहम पेचीदा मेरी गर्दन पर हैं उसने मुझे कमज़ोर कर दिया है; ख़ुदावन्द ने मुझे उनके हवाले किया है, जिनके मुक़ाबिले की मुझ में हिम्मत नहीं।15~ख़ुदावन्द ने मेरे अन्दर ही मेरे बहादुरों को नाचीज़ ठहराया; उसने मेंरे ख़िलाफ़ एक ख़ास जमा'अत को बुलाया, कि मेरे बहादुरों को कुचले; ख़ुदावन्द ने यहूदाह की कुँवारी बेटी को गोया कोल्हू में कुचल डाला।16~इसीलिए मैं रोती हूँ, मेरी आँखें आँसू से भरी हैं, जो मेरी रूह को ताज़ा करे, मुझ से दूर है; मेरे बाल-बच्चे बे सहारा हैं, क्यूँकि दुश्मन ग़ालिब आ गया।17~सिय्यून ने हाथ फैलाए; उसे तसल्ली देने वाला कोई नहीं; या'कू़ब के बारे में ख़ुदावन्द ने हुक्म दिया है, कि उसके इर्दगिर्द वाले उसके दुश्मन हों, यरुशलीम उनके बीच नजासत की तरह है।18~ख़ुदावन्द सच्चा है, क्यूँकि मैंने उसके हुक्म से नाफ़रमानी की है; ऐ सब लोगों, मैं मिन्नत करता हूँ, सुनो, और मेरे दुख़ पर नज़र करो, मेरी कुँवारिया और जवान ग़ुलाम होकर चले गए।19मैंने अपने दोस्तों को पुकारा, उन्होंने मुझे धोका दिया; मेरे काहिन और बुज़ुर्ग अपनी रूह को ताज़ा करने के लिए, शहर में खाना ढूंडते-ढूंडते हलाक हो गए।20ऐ ख़ुदावन्द देख: मैं तबाह हाल हूँ, मेरे अन्दर पेच-ओ-ताब है; मेरा दिल मेरे अन्दर मुज़तरिब है; क्यूँकि मैंने सख़्त बग़ावत की है; बाहर तलवार बे-औलाद करती है और घर में मौत का सामना है।21उन्होंने मेरी आहें सुनी हैं; मुझे तसल्ली देनेवाला कोई नहीं; मेरे सब दुश्मनों ने मेरी मुसीबत सुनी; वह ख़ुश हैं कि तू ने ऐसा किया; तू वह दिन लाएगा, जिसका तू ने 'ऐलान किया है, और वह मेरी तरह हो जाएँगे।22उनकी तमाम शरारत तेरे सामने आयें; उनसे वही कर जो तू ने मेरी तमाम ख़ताओं के ज़रिए' मुझसे किया है; क्यूँकि मेरी आहें बेशुमार हैं और मेरा दिल बेबस है|

Chapter 2

1ख़ुदावन्द ने अपने क़हर में ~सिय्यून की बेटी को कैसे बादल से छिपा दिया! उसने इस्राईल की खू़बसूरती को आसमान से ज़मीन पर गिरा दिया, और अपने ग़ज़ब के दिन भी अपने पैरों की चौकी को याद न किया।2ख़ुदावन्द ने या'कू़ब के तमाम घर हलाक किए, और रहम न किया; उसने अपने क़हर में ~यहूदाह की बेटी के तमाम क़िले' गिराकर ख़ाक में मिला दिए उसने मुल्कों और उसके हाकिमों को नापाक ठहराया ।3उसने बड़े ग़ज़ब में इस्राईल का सींग बिल्कुल काट डाला; उसने दुश्मन के सामने से दहना हाथ खींच लिया; और उसने जलाने वाली आग की तरह, जो चारों तरफ़ ख़ाक करती है, या'कू़ब को जला दिया।4उसने दुश्मन की तरह कमान खींची, मुख़ालिफ़ की तरह दहना हाथ बढ़ाया, और सिय्यून की बेटी के खे़में में सब हसीनों को क़त्ल किया! उसने अपने क़हर की आग को उँडेल दिया।5ख़ुदावन्द दुश्मन की तरह हो गया, वह इस्राईल को निगल गया, वह उसके तमाम महलों को निगल गया, उसने उसके क़िले' मिस्मार कर दिए, और उसने दुख़्तर-ए-यहूदाह में मातम-ओ नौहा बहुतायत से कर दिया।6~और उसने अपने घर को एक बार में ही बर्बाद कर दिया, गोया ख़ैमा-ए-बाग़ था; और अपने मजमे' के मकान को बर्बाद कर दिया; ख़ुदावन्द ने मुक़द्दस 'ईदों और सबतों को सिय्यून से फ़रामोश करा दिया, और अपने क़हर के जोश में बादशाह और काहिन को ज़लील किया।7~ख़ुदावन्द ने अपने मज़बह को रद्द किया, उसने अपने मक़दिस से नफ़रत की, उसके महलों की दीवारों को दुश्मन के हवाले कर दिया; उन्होंने ख़ुदावन्द के घर में ऐसा शोर मचाया, जैसा 'ईद के दिन।8~ख़ुदावन्द ने दुख़्तर-ए-सिय्यून की दीवार गिराने का इरादा किया है; उसने डोरी डाली है, और बर्बाद करने से दस्तबरदार नहीं हुआ; उसने फ़सील और दीवार को मग़मूम किया; वह एक साथ ~मातम करती हैं।9~उसके दरवाज़े ज़मीन में गर्क़ हो गए; उसने उसके बेन्डों को तोड़कर बर्बाद कर दिया; उसके बादशाह और उमरा बे-शरी'अत क़ौमों में हैं; उसके नबी भी ख़ुदावन्द की तरफ़ से कोई ख़्वाब नहीं देखते।10दुख़्तर-ए-सिय्यून के बुज़ुर्ग ख़ाक नशीन और ख़ामोश हैं; वह अपने सिरों पर ख़ाक डालते और टाट ओढ़ते हैं; यरुशलीम की कुँवारियाँ ज़मीन पर सिर झुकाए हैं।11मेरी आँखें रोते-रोते धुंदला गईं, मेरे अन्दर पेच-ओ-ताब है, मेरी दुख़्तर-ए-क़ौम की बर्बादी के ज़रिए' मेरा कलेजा निकल आया; क्यूँकि छोटे बच्चे और दूध पीने वाले शहर की गलियों में बेहोश हैं।12~जब वह शहर की गलियों में के ज़ख्मियों की तरह ग़श खाते, और जब अपनी माँओं की गोद में जाँ बलब होते हैं; तो उनसे कहते हैं, कि ग़ल्ला और मय कहाँ है?13ऐ दुख़्तर-ए-यरुशलीम, मैं तुझे क्या नसीहत करूँ, और किससे मिसाल दूँ? ऐ कुँवारी दुख्त़र-ए-सिय्यून, तुझे किस की तरह जान कर तसल्ली दूँ? क्यूँकि तेरा ज़ख़्म समुन्दर सा बड़ा है; तुझे कौन शिफ़ा देगा?14तेरे नबियों ने तेरे लिए, बातिल और बेहूदा ख़्वाब देखे: और तेरी बदकिरदारी ज़ाहिर न की,ताकि तुझे ग़ुलामी ~से वापस लाते: बल्कि तेरे लिए झूटे पैग़ाम और जिलावतनी के सामान देखे।15सब आने जानेवाले तुझ पर तालियाँ बजाते हैं; वह दुख़्तर-ए-यरुशलीम पर सुसकारते और सिर हिलाते हैं, के क्या, ये वही शहर है, जिसे लोग कमाल-ए-हुस्न और फ़रहत-ए-जहाँ कहते थे?16तेरे सब दुश्मनों ने तुझ पर मुँह पसारा है; वह सुसकारते और दाँत पीसते हैं;वो कहते हैं, हम उसे निगल गए; बेशक हम इसी दिन के मुन्तज़िर थे; इसलिए आ पहुँचा, और हम ने देख लिया17ख़ुदावन्द ने जो तय किया वही किया; उसने अपने कलाम को, जो पुराने दिनों में फ़रमाया था, पूरा किया; उसने गिरा दिया, और रहम न किया; और उसने दुश्मन को तुझ पर शादमान किया, उसने तेरे मुख़ालिफ़ों का सींग बलन्द किया।18उनके दिलों ने ख़ुदावन्द से फ़रियाद की, ऐ दुख़्तर-ए-सिय्यून की फ़सील,शब-ओ-रोज़ ऑसू नहर की तरह जारी रहें; तू बिल्कुल आराम न ले; तेरी आँख की पुतली आराम न करे।19उठ रात को पहरों के शुरू' में फ़रियाद कर; ख़ुदावन्द के हुजू़र अपना दिल पानी की तरह उँडेल दे; अपने बच्चों की ज़िन्दगी के लिए, जो सब गलियों में भूक से बेहोश पड़े हैं, उसके सामने में दस्त-ए-दु'आ बलन्द कर।20~ऐ ख़ुदावन्द, नज़र कर, और देख, कि तू ने किससे ये किया ! क्या 'औरतें अपने फल या'नी अपने लाडले बच्चों को खाएँ? क्या काहिन और नबी ख़ुदावन्द के मक़्दिस में क़त्ल किए जाएँ?21बुज़ुर्ग-ओ-जवान गलियों में ख़ाक पर पड़े हैं; मेरी कुँवारियाँ और मेरे जवान तलवार से क़त्ल हुए; तू ने अपने क़हर के दिन उनको क़त्ल किया; तूने उनको काट डाला, और रहम न किया।22तूने मेरी दहशत को हर तरफ से गोया 'ईद के दिन बुला लिया, और ख़ुदावन्द के क़हर के दिन न कोई बचा, न बाक़ी रहा; जिनको मैंने गोद में खिलाया और पला पोसा, मेरे दुश्मनों ने फ़ना कर दिया|

Chapter 3

1~मैं ही वह शख़्स हूँ जिसने उसके ग़ज़ब की लाठी से दुख पाया।2वह मेरा रहबर हुआ, और मुझे रौशनी में नहीं, बल्कि तारीकी में चलाया;3यक़ीनन उसका हाथ दिन भर मेरी मुख़ालिफ़त करता रहा।4~उसने मेरा गोश्त और चमड़ा ख़ुश्क कर दिया, और मेरी हड्डियाँ तोड़ डालीं,5उसने मेरे चारों तरफ़ दीवार खेंची और मुझे कड़वाहट और-मशक़्क़त से घेर लिया;6~उसने मुझे लम्बे वक़्त से मुर्दों की तरह तारीक मकानों में रख्खा।7~उसने मेरे गिर्द अहाता बना दिया,कि मैं बाहर नहीं निकल सकता; उसने मेरी ज़ंजीर भारी कर दी।8बल्कि जब मैं पुकारता और दुहाई देता हूँ, तो वह मेरी फ़रियाद नहीं सुनता।9~उसने तराशे हुए पत्थरों से मेरे रास्तेबन्द कर दिए, उसने मेरी राहें टेढ़ी कर दीं।10वह मेरे लिए घात में बैठा हुआ रीछ और कमीनगाह का शेर-ए-बब्बर है।11उसने मेरी राहें तंग कर दीं और मुझे रेज़ा-रेज़ा करके बर्बाद कर दिया।12उसने अपनी कमान खींची और मुझे अपने तीरों का निशाना बनाया।13उसने अपने तर्कश के तीरों से मेरे गुर्दों को छेद डाला।14मैं अपने सब लोगों के लिए मज़ाक़, और दिन भर उनका चर्चा हूँ।15उसने मुझे तल्ख़ी से भर दिया और नाग़दोने ~से मदहोश किया।16उसने संगरेज़ों से मेरे दाँत तोड़े और मुझे ज़मीन की तह में लिटाया।17~तू ने मेरी जान को सलामती से दूरकर दिया, मैं ख़ुशहाली को भूल गया;18और मैंने कहा, "मैं नातवाँ हुआ, और ख़ुदावन्द से मेरी उम्मीद जाती रही।"19~मेरे दुख का ख़्याल कर; मेरी मुसीबत, या'नी तल्ख़ी और नाग़दोने को याद कर।20इन बातों की याद से मेरी जान मुझ में बेताब है।21~मैं इस पर सोचता रहता हूँ, इसीलिए मैं उम्मीदवार हूँ।22ये ख़ुदावन्द की शफ़क़त है, कि हम फ़ना नहीं हुए, क्यूँकि उसकी रहमत ला ज़वाल है।23वह हर सुबह ताज़ा है; तेरी वफ़ादारी 'अज़ीम है24~मेरी जान ने कहा, "मेरा हिस्सा ख़ुदावन्द है, इसलिए मेरी उम्मीद उसी से है।”25ख़ुदावन्द उन पर महरबान है, जो उसके मुन्तज़िर हैं; उस जान पर जो उसकी तालिब है।26~ये खू़ब है कि आदमी उम्मीदवार रहे और ख़ामोशी से ख़ुदावन्द की नजात का इन्तिज़ार करे।27आदमी के लिए बेहतर है कि अपनी जवानी के दिनों में फ़रमॉबरदारी करे।28~वह तन्हा बैठे और ख़ामोश रहे, क्यूँकि ये ख़ुदा ही ने उस पर रख्खा है।29वह अपना मुँह ख़ाक पर रख्खे, कि शायद कुछ उम्मीद की सूरत निकले।30~वह अपना गाल उसकी तरफ़ फेर दे, जो उसे तमाँचा मारता है और मलामत से खू़ब सेर हो31क्यूँकि ख़ुदावन्द हमेशा के लिए रद्द न करेगा,32क्यूँकि अगरचे वह दुख़ दे, तोभी अपनी शफ़क़त की दरयादिली से रहम करेगा।33~क्यूँकि वह बनी आदम पर खु़शी से दुख़ मुसीबत नहीं भेजता।34रू-ए-ज़मीन के सब कै़दियों को पामाल करना35हक़ ताला के सामने किसी इन्सान की हक़ तल्फ़ी करना,36और किसी आदमी का मुक़द्दमा बिगाड़ना,ख़ुदावन्द देख नहीं सकता।37~वह कौन है जिसके कहने के मुताबिक़ होता है, हालाँकि ख़ुदावन्द नहीं फ़रमाता?38~क्या भलाई और बुराई हक़ ताला ही के हुक्म से नहीं हैं ?39~इसलिए आदमी जीते जी क्यूँ शिकायत करे, जब कि उसे गुनाहों की सज़ा मिलती हो?40हम अपनी राहों को ढूंडें और जाँचें, और ख़ुदावन्द की तरफ़ फिरें।41हम अपने हाथों के साथ दिलों को भी ख़ुदा के सामने आसमान की तरफ़ उठाएँ:42हम ने ख़ता और सरकशी की, तूने मु'आफ़ नहीं किया।43तू ने हम को क़हर से ढाँपा और रगेदा; तूने क़त्ल किया, और रहम न किया।44तू बादलों में मस्तूर हुआ, ताकि हमारी दु'आ तुझ तक न पहुँचे।45~तूने हम को क़ौमों के बीच कूड़े करकट और नजासत सा बना दिया।46हमारे सब दुश्मन हम पर मुँह पसारते हैं;47ख़ौफ़-और-दहशत और वीरानी-और-हलाकत ने हम को आ दबाया।48~मेरी दुख़्तर-ए-क़ौम की तबाही के ज़रिए' मेरी आँखों से आँसुओं की नहरें जारी हैं।49मेरी ऑखें अश्कबार हैं और थमती नहीं, उनको आराम नहीं,50जब तक ख़ुदावन्द आसमान पर से नज़र करके न देखे;51मेरी आँखें मेरे शहर की सब बेटियों के लिए मेरी जान को आज़ुर्दा करती हैं।52~मेरे दुश्मनों ने बे वजह मुझे परिन्दे की तरह दौड़ाया;53उन्होंने चाह-ए-ज़िन्दान में मेरी जान लेने को मुझ पर पत्थर रख्खा;54पानी मेरे सिर से गुज़र गया, मैंने कहा, 'मैं मर मिटा।'55ऐ ख़ुदावन्द, मैंने तह दिल से तेरे नाम की दुहाई दी;56तू ने मेरी आवाज़ सुनी है, मेरी आह-ओ- फ़रियाद से अपना कान बन्द न कर"।57जिस रोज़ मैने तुझे पुकारा, तू नज़दीक आया; और तू ने फ़रमाया, "परेशान न हो!"58ऐ ख़ुदावन्द, तूने मेरी जान की हिमायत की और उसे छुड़ाया।59~ऐ ख़ुदावन्द, तू ने मेरी मज़लूमी देखी; मेरा इन्साफ़ कर।60~तूने मेरे ख़िलाफ़ उनके तमाम इन्तक़ामऔर सब मन्सूबों को देखा है।61ऐ ख़ुदावन्द, तूने मेरे ख़िलाफ़ उनकी मलामत और उनके सब मन्सूबों को सुना है;62जो मेरी मुख़ालिफ़त को उठे उनकी बातें और दिन भर मेरी मुख़ालिफ़त में उनके मन्सूबे।63उनकी महफ़िल-ओ-बरख़ास्त को देख कि मेरा ही ज़िक्र है।64ऐ ख़ुदावन्द, उनके 'आमाल के मुताबिक़ उनको बदला दे।65~उनको कोर दिल बना कि तेरी ला'नत उन पर हो।66क़हर से उनको भगा और रू-ए-ज़मीन से नेस्त-ओ-नाबूद कर दे|"

Chapter 4

1~सोना कैसा बेआब हो गया! कुन्दन कैसा बदल गया! मक़्दिस के पत्थर तमाम गली कूचों में पड़े हैं!2सिय्यून के 'अज़ीज़ फ़र्ज़न्द,जो ख़ालिस सोने की तरह थे, कैसे कुम्हार के बनाए हुए बर्तनों के बराबर ठहरे!3गीदड़ भी अपनी छातियों से अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं; लेकिन मेरी दुख़्तर-ए-क़ौम वीरानी शुतरमुर्ग़ की तरह बे-रहम है।4दूध पीते बच्चों की ज़बान प्यास के मारे तालू से जा लगी; बच्चे रोटी मांगते हैं लेकिन उनको कोई नहीं देता।5जो नाज़ पर्वरदा थे, गलियों में तबाह हाल हैं; जो बचपन से अर्ग़वानपोश थे, मज़बलों पर पड़े हैं।6~क्यूँकि मेरी दुख़्तर-ए-क़ौम की बदकिरदारी सदूम के गुनाह से बढ़कर है, जो एक लम्हे में बर्बाद हुआ,और किसी के हाथ उस पर दराज़ न हुए।7उसके शुर्फ़ा बर्फ़ से ज़्यादा साफ़ और दूध से सफ़ेद थे, उनके बदन मूंगे से ज़्यादा सुर्ख थे, उन की झलक नीलम की सी थी;8अब उनके चेहरे सियाही से भी काले हैं; वह बाज़ार में पहचाने नहीं जाते; उनका चमड़ा हड्डियों से सटा है; वह सूख कर लकड़ी सा हो गया।9~तलवार से क़त्ल होने वाले, भूकों मरने वालों से बहतर हैं; क्यूँकि ये खेत का हासिल न मिलने से कुढ़कर हलाक होते हैं।10~रहमदिल 'औरतों के हाथों ने अपने बच्चों को पकाया; मेरी दुख़्तर-ए-क़ौम की तबाही में वही उनकी खू़राक हुए।11~ख़ुदावन्द ने अपने ग़ज़ब को अन्जाम दिया; उसने अपने क़हर-ए-शदीद को नाज़िल किया। और उसने सिय्यून में आग भड़काई जो उसकी बुनियाद को चट कर गई।12~रू-ए-ज़मीन के बादशाह और दुनिया के बाशिन्दे बावर नहीं करते थे, कि मुख़ालिफ़ और दुश्मन यरुशलीम के फाटकों से घुस आएँगे।13ये उसके नबियों के गुनाहों और काहिनों की बदकिरदारी की वजह से हुआ, जिन्होंने उसमें सच्चों का खू़न बहाया।14वह अन्धों की तरह गलियों में भटकते, और खू़न से आलूदा होते हैं, ऐसा कि कोई उनके लिबास को भी छू नहीं सकता।15~वह उनको पुकार कर कहते थे, "दूर रहो! नापाक, दूर रहो! दूर रहो, छूना मत!" जब वह भाग जाते और आवारा फिरते, तो लोग कहते थे, 'अब ये यहाँ न रहेंगे।"16~ख़ुदावन्द के क़हर ने उनको पस्त किया, अब वह उन पर नज़र नहीं करेगा; उन्होंने काहिनों की 'इज़्ज़त न की, और बुज़ुगों का लिहाज़ न किया।17~हमारी आँखें बातिल मदद के इन्तिज़ार में थक गईं, हम उस क़ौम का इन्तिज़ार करते रहे जो बचा नहीं सकती थी।18उन्होंने हमारे पाँव ऐसे बाँध रख्खे हैं, कि हम बाहर नहीं निकल सकते; हमारा अन्जाम नज़दीक है, हमारे दिन पूरे हो गए; हमारा वक़्त आ पहुँचा।19हम को दौड़ाने वाले आसमान के उक़ाबों से भी तेज़ हैं; उन्होंने पहाड़ों पर हमारा पीछा किया; वह वीराने में हमारी घात में बैठे।20~हमारी ज़िन्दगी का दम ख़ुदावन्द का मम्सूह,उनके गढ़ों में गिरफ़्तार हो गया; जिसकी वजह हम कहते थे, कि उसके साये तले हम क़ौमों के बीच ज़िन्दगी बसर करेंगे।21~ऐ दुख़्तर-ए-अदोम, जो 'ऊज़ की सरज़मीन में बसती है, ख़ुश-और-ख़ुर्रम हो; ये प्याला तुझ तक भी पहुँचेगा; तू मस्त और बरहना हो जाएगी।22ऐ दुख़्तर-ए-सिय्यून, तेरी बदकिरदारी की सज़ा तमाम हुई; वह मुझे फिर ग़ुलाम करके नहीं ले जाएगा; ऐ~दुख़्तर-ए-अदोम, वह तेरी बदकिरदारी की सज़ा देगा; वह तेरे गुनाह वाश करेगा|

Chapter 5

1~ऐ ख़ुदावन्द, जो कुछ हम पर गुज़रा~उसे याद कर; नज़र कर और हमारी रुस्वाई को देख।2~हमारी मीरास अजनबियों के हवाले की गई, हमारे घर बेगानों ने ले लिए।3हम यतीम हैं, हमारे बाप नहीं,~हमारी माँए बेवाओं की तरह हैं।4~हम ने अपना पानी मोल लेकर पिया;~अपनी लकड़ी भी हम ने दाम देकर ली।5~हम को रगेदने वाले हमारे सिर पर हैं;~हम थके हारे और बेआराम हैं।6हम ने मिस्रियों और असूरियों की इता'अत क़ुबूल की ताकि रोटी से सेर और आसूदा हों।7~हमारे बाप दादा गुनाह करके चल बसे, और हम उनकी बदकिरदारी की सज़ा पा रहे हैं।8गु़लाम हम पर हुक्मरानी करते हैं;~उनके हाथ से छुड़ाने वाला कोई नहीं।9सहरा नशीनों की तलवार के ज़रिए',~हम जान पर खेलकर रोटी हासिल करते हैं।10क़हत की झुलसाने वाली आग के ज़रिए',हमारा चमड़ा तनूर की तरह ~सियाह हो गया है।11~उन्होंने सिय्यून में 'औरतों को बेहुरमत किया और यहूदाह के शहरों में कुँवारी~लड़कियों को ।12हाकिम को उनके हाथों से लटका दिया;~बुज़ुगों की रू-दारी न की गई।13जवानों ने चक्की पीसी,~और बच्चों ने गिरते पड़ते लकड़ियाँ ढोईं।14बुज़ुर्ग फाटकों पर दिखाई नहीं देते,~जवानों की नग़मा परदाज़ी सुनाई नहीं देती।15हमारे दिलों से खुशी जाती रही;~हमारा रक़्स मातम से बदल गया।16ताज हमारे सिर पर से गिर पड़ा;~हम पर अफ़सोस! कि हम ने गुनाह किया।17~इसीलिए हमारे दिल बेताब हैं;~इन्हीं बातों के ज़रिए' हमारी आँखें धुंदला गई,18कोह-ए-सिय्यून की वीरानी के ज़रिए', उस पर गीदड़ फिरते हैं।19लेकिन तू, ऐ ख़ुदावन्द, हमेशा तक क़ायम है;~और तेरा तख़्त नसल-दर-नसल।20फिर तू क्यूँ हम को हमेशा के लिए भूल जाता है, और हम को लम्बे वक़्त तक तर्क करता है?21~ऐ ख़ुदावन्द, हम को अपनी तरफ़ फिरा,~तो हम फिरेंगे; हमारे दिन बदल दे, जैसे पहले से थे।22क्या तू ने हमको बिल्कुल रद्द कर दिया है? क्या तू हमसे शख़्त नाराज़ है?